भारतीय हिमालय क्षेत्र

हिमालय देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 16 .2 प्रतिशत हिस्सा है। यह न केवल भारत का एक प्रमुख वाटरशेड है बल्कि मॉनसून प्रणाली में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस पर्वत श्रृंखला पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव पूरे उप-महाद्वीप को प्रभावित कर सकता है

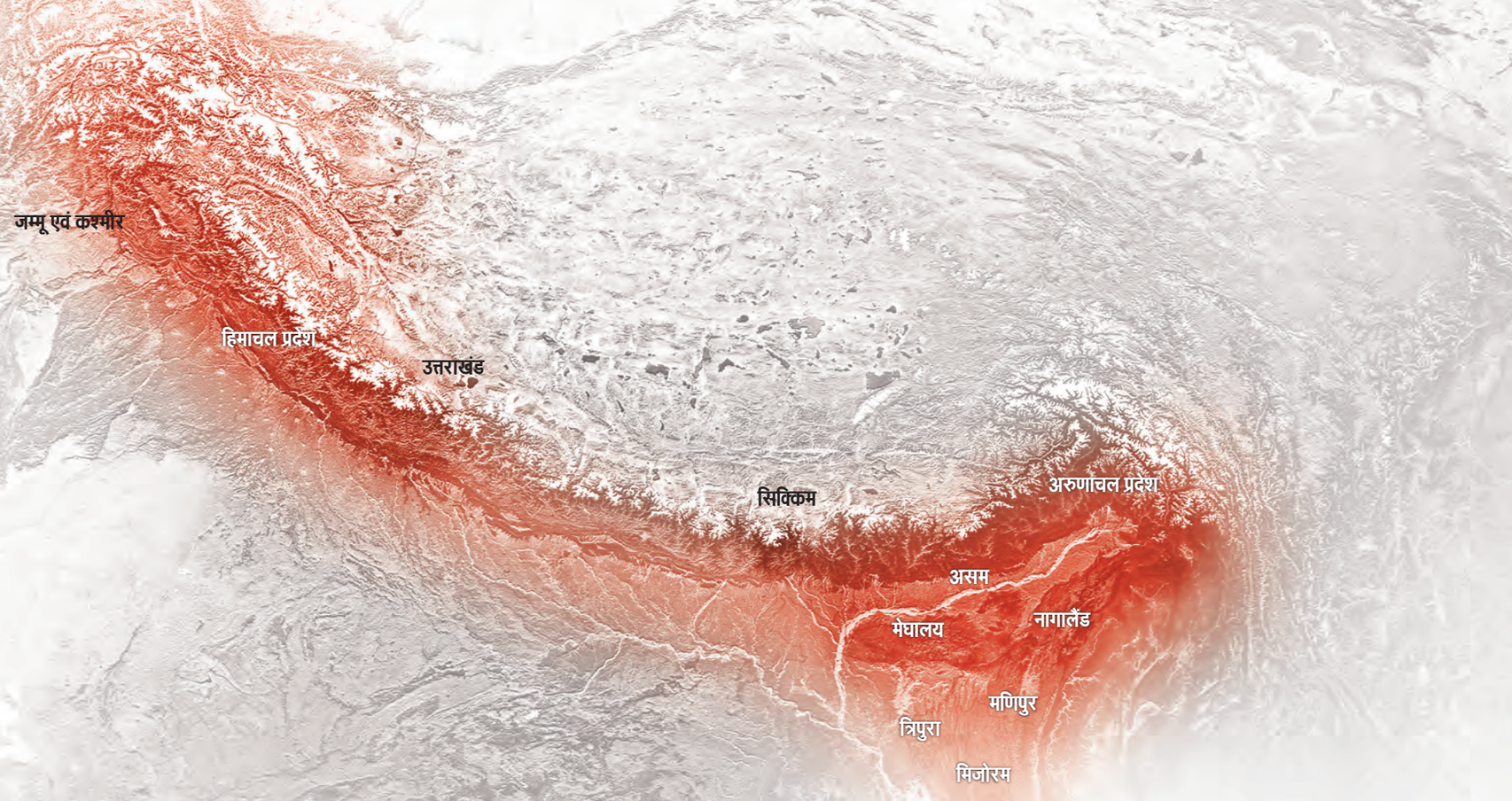

जनसंख्या

कुल **47** मिलियन

ग्रामीण **80%** शहरी **20%**

भूमि उपयोग

बोया गया कुल क्षेत्र

14.5%

वन

47%

आजीविका

61.5%

पहाड़ पर होने वाली खेती पर निर्भर

20.5%

सेवा क्षेत्र पर

जलवायु परिवर्तन के रुझान

अधिकतम तापमान में परिवर्तन (1961-90 की तुलना में 2021-50)

क्षेत्र के अधिकांश जिलों में अधिकतम तापमान कम से कम 1.5 से 2 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने का अनुमान है

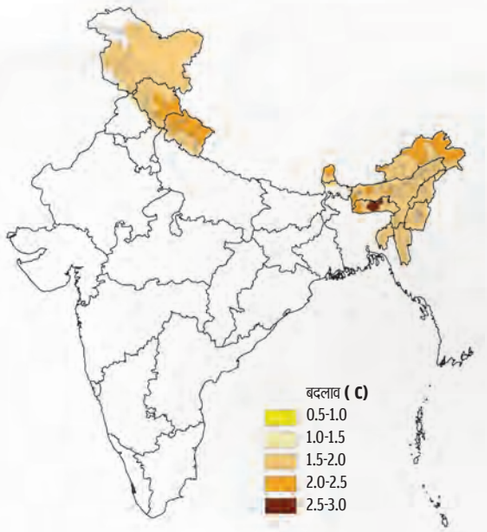

बाढ़

भारत के पूर्वोत्तर राज्य, विशेष रूप से असम और मणिपुर के कुछ हिस्से अधिक संवेदनशील हैं

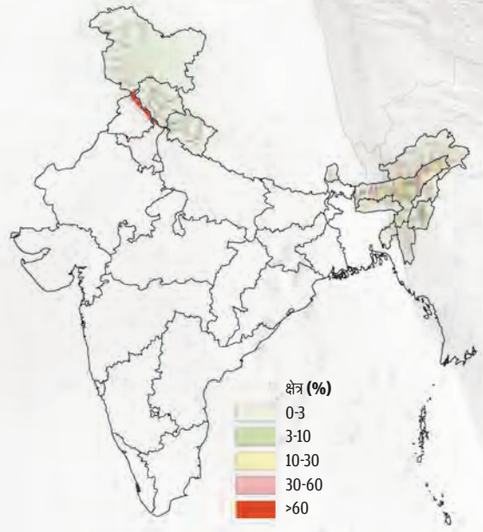

स्रोत: राम राव सीए, एट अल., एटलस ऑन वलनरबिलिटी ऑफ इंडियन एग्रीकल्चर टु क्लाइमेट चेंज, सेंट्रल रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ड्रायलैंड एग्रीकल्चर, हैदराबाद, 2013

हिमालय का औसत तापमान पिछले 30 वर्षों में 0.6 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गया है, वहीं गर्म दिनों की संख्या में भी इजाफा हो रहा है

जलवायु परिवर्तन : पूर्वानुमान और प्रभाव

वार्षिक तापमान में वृद्धि

0 .9 डिग्री सेल्सियस +- 0 .6 डिग्री सेल्सियस से 2 .6 डिग्री सेल्सियस +-0 .7 डिग्री सेल्सियस

वार्षिक वर्षा में वृद्धि की संभावना (2021-50 तक)

5-13 प्रतिशत

बाढ़ में वृद्धि (2021-50)

10 से 30 प्रतिशत तक

सूखा : कुछ हिस्सों में मध्यम से चरम सूखे का अनुमान

प्रभाव और संवेदनशीलता

- हिमनद, झीलों के फटने के कारण आकस्मिक आने वाली बाढ़ से भूस्खलन हो सकता है और बड़े पैमाने पर खाद्य सुरक्षा प्रभावित हो सकती है
- हिमालयी हिमनद दुनिया के दूसरे हिमनदों की तुलना में कहीं तेजी से पिघल रहे हैं
- पिछले कुछ वर्षों में सेब की उत्पादकता में 2-3 प्रतिशत की कमी आई है, इस कमी के और बढ़ने की सम्भावना जताई जा रही है
- हिमालयी क्षेत्र में बरसाती दिनों की तीव्रता में अनुमानित वृद्धि 2-12 प्रतिशत अंकित की गई है